Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 3 | Issue 4 | (October - December 2026)

बिहार में शिक्षा और पलायन का अंतर्संबंध

डॉ. मंजुषा कुमारी
पूर्व शोध छात्रा, वाई. बी. एन. यूनिवर्सिटी, राँची, झारखण्ड, भारत

सारांश

बिहार में शिक्षा और पलायन का संबंध सामाजिक, आर्थिक तथा क्षेत्रीय असमानताओं से प्रभावित एक बहुआयामी प्रक्रिया है। राज्य में उच्च शिक्षा के विस्तार के बावजूद गुणवत्तापूर्ण शिक्षण संस्थानों, तकनीकी संसाधनों और व्यावहारिक प्रशिक्षण की असमान उपलब्धता विद्यार्थियों को बेहतर शैक्षिक अवसरों के लिए स्थान परिवर्तन हेतु प्रेरित करती है। शिक्षा के लिए होने वाला पलायन केवल अंतरराज्यीय स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि जिले के भीतर और राज्य के विभिन्न क्षेत्रों के बीच भी दिखाई देता है। उच्च शिक्षा और श्रम बाजार की आवश्यकताओं के बीच असंतुलन, कौशल अंतराल तथा योग्यता के अनुरूप स्थानीय रोजगार की कमी शिक्षित युवाओं के पलायन को प्रभावित करती है। शिक्षा से विकसित आकांक्षाएँ पर्याप्त स्थानीय अवसरों के अभाव में रोजगार आधारित पलायन को बढ़ावा देती हैं। दूसरी ओर, रोजगार के लिए होने वाला पारिवारिक पलायन बच्चों की शैक्षिक निरंतरता को भी प्रभावित करता है। प्रवासी आय से शिक्षा पर व्यय की संभावनाएँ बढ़ती हैं, जबकि अभिभावकों की अनुपस्थिति और बार-बार स्थान परिवर्तन से पढ़ाई बाधित हो सकती है। स्थानीय स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, व्यावसायिक कौशल, व्यावहारिक प्रशिक्षण, स्वरोजगार और उद्यमिता के अवसरों का विस्तार शिक्षा तथा रोजगार के बीच संतुलन स्थापित करने और विवशतापूर्ण पलायन को कम करने में सहायक हो सकता है।

बीज शब्द: बिहार, शिक्षा, पलायन, उच्च शिक्षा, कौशल विकास, शिक्षित बेरोजगारी, रोजगार।

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी समाज के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास का प्रमुख आधार है। यह व्यक्ति को ज्ञान और कौशल प्रदान करने के साथ-साथ उसके रोजगार, आय, सामाजिक स्थिति और जीवन की संभावनाओं को भी प्रभावित करती है। दूसरी ओर पलायन ऐसी सामाजिक-आर्थिक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति शिक्षा, रोजगार, आजीविका अथवा बेहतर जीवन की तलाश में अपने मूल निवास स्थान से किसी अन्य स्थान की ओर जाता है। शिक्षा और पलायन को सामान्यतः दो अलग प्रक्रियाओं के रूप में देखा जाता है, किंतु व्यवहार में दोनों के बीच गहरा संबंध पाया जाता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की उपलब्धता किसी क्षेत्र में युवाओं को बनाए रखने में सहायक हो सकती है, जबकि उच्च एवं तकनीकी शिक्षा के सीमित अवसर विद्यार्थियों को दूसरे शहरों और राज्यों की ओर जाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। बिहार के संदर्भ में शिक्षा और पलायन का यह संबंध विशेष महत्त्व रखता है। राज्य की बड़ी आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है और उसकी आजीविका का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा कृषि तथा असंगठित क्षेत्रों पर निर्भर है। बिहार आर्थिक सर्वेक्षण राज्य में शिक्षा, कौशल विकास, रोजगार और मानव संसाधन के विस्तार को आर्थिक एवं सामाजिक विकास की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण मानता है। राज्य में विद्यालयी तथा उच्च शिक्षा के विस्तार के लिए अनेक प्रयास किए गए हैं, फिर भी विभिन्न क्षेत्रों और सामाजिक समूहों के बीच उपलब्ध अवसरों में अंतर बना हुआ है (वित्त विभाग, बिहार सरकार, 2025)। ऐसी परिस्थितियों में शिक्षा केवल स्थानीय विकास का माध्यम नहीं रहती, बल्कि युवाओं की भौगोलिक गतिशीलता से भी जुड़ जाती है।

शिक्षा और पलायन का संबंध दो दिशाओं में दिखाई देता है। पहली स्थिति में विद्यार्थी बेहतर विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, तकनीकी संस्थान अथवा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए अपने मूल स्थान से बाहर जाते हैं। दूसरी स्थिति में परिवार के सदस्य रोजगार के लिए पलायन करते हैं, जिसका प्रभाव पीछे रह गए अथवा परिवार के साथ जाने वाले बच्चों की शिक्षा पर पड़ सकता है। बाहर से प्राप्त आय कुछ परिवारों में बच्चों की शिक्षा पर अधिक व्यय की संभावना पैदा करती है, वहीं अभिभावकों की अनुपस्थिति अथवा बार-बार स्थान परिवर्तन से पढ़ाई की निरंतरता प्रभावित हो सकती है। इस प्रकार बिहार में शिक्षा और पलायन के बीच संबंध एकतरफा न होकर पारस्परिक है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. बिहार में शिक्षा और पलायन के अंतर्संबंध का अध्ययन करना।
2. बेहतर उच्च, तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा की तलाश में बिहार से होने वाले छात्र पलायन के प्रमुख कारणों का विश्लेषण करना।
3. रोजगार एवं आजीविका के लिए होने वाले पारिवारिक पलायन का बच्चों की शिक्षा, विद्यालयी निरंतरता और शैक्षिक अवसरों पर पड़ने वाले प्रभाव को समझना।
4. शिक्षा, कौशल, रोजगार और युवाओं की भौगोलिक गतिशीलता के बीच संबंध का विश्लेषण करना तथा ऐसी शैक्षिक और विकासात्मक आवश्यकताओं की पहचान करना जो विवशतापूर्ण पलायन को कम करने में सहायक हो सकती हैं।

साहित्य समीक्षा

नालंदा जिले के गिरियक प्रखंड में सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि विद्यालय तक पहुँच उपलब्ध होने के बावजूद परिवार की आर्थिक स्थिति, अभिभावकीय सहयोग और सामाजिक परिस्थितियाँ बच्चों की शैक्षिक निरंतरता को प्रभावित करती हैं। यह अध्ययन बिहार में विद्यालयी स्तर पर शिक्षा से विच्छेदन की समस्या को स्थानीय संदर्भ में समझने का आधार प्रदान करता है (प्रियंका कुमारी एवं प्रोफेसर (डॉ.) हरिश कंसल, 2024)।

बिहार में माध्यमिक शिक्षा की स्थिति पर किए गए अध्ययन में विद्यालयों के विस्तार, आधारभूत सुविधाओं, शिक्षक प्रशिक्षण और छात्रवृत्ति जैसी पहलों को शिक्षा की पहुँच बढ़ाने के लिए महत्त्वपूर्ण माना गया है। इसके साथ ही आर्थिक और सामाजिक विषमताओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की समान उपलब्धता में बाधा के रूप में रेखांकित किया गया है। इस दृष्टि से माध्यमिक शिक्षा की स्थिति आगे की उच्च शिक्षा और छात्र गतिशीलता को समझने में महत्त्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करती है (आदित्य सिन्हा एवं पारस रत्न, 2024)।

कोसी और सीमांचल क्षेत्र से होने वाले पलायन पर किए गए अध्ययन में बाढ़, कृषि पर निर्भरता, रोजगार की कमी और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की अस्थिरता को पलायन की प्रमुख पृष्ठभूमि के रूप में देखा गया है। अध्ययन में स्थानीय स्तर पर रोजगार और आय के अवसर बढ़ाने में जीविका समूहों की भूमिका पर विशेष बल दिया गया है। इससे यह समझ विकसित होती है कि स्थानीय अवसरों की उपलब्धता लोगों के पलायन संबंधी निर्णयों को प्रभावित कर सकती है (चन्द्रा सत्या प्रकाश, 2023)।

क्षेत्रीय असमानता और पलायन के संबंध को समझने के लिए कुमाऊँ मंडल पर किया गया अध्ययन भी उपयोगी है। इसमें पर्वतीय और मैदानी जिलों के बीच विकास, रोजगार और आर्थिक अवसरों की असमानता को पलायन के प्रतिरूप से जोड़ा गया है। यद्यपि अध्ययन उत्तराखंड पर आधारित है, किंतु अवसरों के असमान वितरण और बेहतर संभावनाओं की तलाश में स्थान परिवर्तन का उसका निष्कर्ष बिहार की परिस्थितियों को तुलनात्मक रूप से समझने में सहायक है (Yadav & Yadav, 2024)।

पिताओं के प्रवासन और पीछे रह गए बच्चों की शिक्षा पर किए गए अध्ययन में बिहार तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश के संदर्भ में यह पाया गया कि प्रवासन का प्रभाव सभी बच्चों पर समान नहीं होता। परिवार को बाहर से प्राप्त आय शिक्षा में सहायक हो सकती है, किंतु पिता की अनुपस्थिति से बच्चों, विशेषकर बालिकाओं, पर घरेलू जिम्मेदारियाँ बढ़ने की संभावना भी रहती है। बिहार में प्रवासी और गैर-प्रवासी पिताओं के बच्चों की विद्यालयी उपस्थिति के बीच कोई स्पष्ट सकारात्मक अंतर नहीं पाया गया, जिससे यह संबंध परिस्थिति-विशिष्ट दिखाई देता है (Pintu Paul, 2025)।

माता-पिता के अस्थायी श्रम पलायन और बच्चों की शिक्षा के संबंध में किए गए एक अध्ययन में बिहार के नौ गाँवों और वाराणसी के निर्माण स्थलों से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण किया गया। अध्ययन में पाया गया कि बाहर से भेजी गई धनराशि पीछे रह गए बच्चों की शिक्षा तक पहुँच में सहायता कर सकती है, जबकि माता-पिता के साथ पलायन करने वाले बच्चों में विद्यालय से बाहर रहने और पढ़ाई छोड़ने का जोखिम अधिक होता है (Roy, Singh & Roy, 2015)।

उच्च शिक्षा के संदर्भ में बिहार से विद्यार्थियों के बाहर जाने की प्रवृत्ति पर किए गए शोध में उच्च शिक्षा के सीमित विकल्प, संस्थानों की गुणवत्ता और बेहतर शैक्षिक अवसरों की खोज को छात्र पलायन से जोड़कर देखा गया है। यह अध्ययन इस बात को रेखांकित करता है कि शिक्षा के लिए होने वाला पलायन केवल आर्थिक अभाव का परिणाम नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक आकांक्षाओं और बेहतर भविष्य की अपेक्षाओं से भी जुड़ा है (Anand, 2015)।

उपलब्ध साहित्य से स्पष्ट है कि बिहार में विद्यालयी शिक्षा, छात्र पलायन, श्रम प्रवास और प्रवासी परिवारों के बच्चों की शिक्षा पर अलग-अलग अध्ययन उपलब्ध हैं। किंतु शिक्षा को पलायन का कारण और पलायन को शिक्षा को प्रभावित करने वाली प्रक्रिया इन दोनों पक्षों को एक साथ रखकर देखने वाले अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित हैं। प्रस्तुत अध्ययन इसी अंतर्संबंध को समेकित रूप से समझने का प्रयास करता है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है तथा मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। अध्ययन का उद्देश्य बिहार में शिक्षा और पलायन के अंतर्संबंध को समझना है। इसके अंतर्गत एक ओर बेहतर शैक्षिक अवसरों, उच्च शिक्षा, तकनीकी एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण की तलाश में होने वाले छात्र पलायन का अध्ययन किया गया है, वहीं दूसरी ओर रोजगार और आजीविका के कारण होने वाले पारिवारिक पलायन का बच्चों की शिक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव को भी विश्लेषण में शामिल किया गया है। स्रोतों के चयन में इस बात को प्राथमिकता दी गई है कि वे सीधे बिहार की शिक्षा, पलायन, रोजगार, कौशल, विद्यालयी निरंतरता या छात्र गतिशीलता से संबंधित हों। आँकड़ों के विश्लेषण में मुख्यतः प्रतिशत, तुलनात्मक अध्ययन, प्रवृत्ति विश्लेषण तथा व्याख्यात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में शिक्षा और पलायन के संबंध को केवल एक दिशा में नहीं देखा गया है। छात्र पलायन, पारिवारिक

पलायन, बच्चों की शैक्षिक निरंतरता, कौशल, रोजगार तथा क्षेत्रीय अवसरों को परस्पर जोड़कर विश्लेषित किया गया है। इस प्रकार शोध पद्धति का उद्देश्य विभिन्न स्रोतों से प्राप्त तथ्यों को समेकित कर बिहार में शिक्षा और पलायन के अंतर्संबंध की स्पष्ट व्याख्या प्रस्तुत करना है।

बिहार में शिक्षा और पलायन का अंतर्संबंध

बिहार में शिक्षा और पलायन का अंतर्संबंध सामाजिक, आर्थिक और क्षेत्रीय परिस्थितियों से निर्मित एक बहुआयामी प्रक्रिया है। इसे केवल विद्यालयी शिक्षा अथवा बच्चों के विद्यालय छोड़ने की समस्या तक सीमित करके नहीं समझा जा सकता। इसका संबंध उच्च शिक्षा की उपलब्धता और गुणवत्ता, तकनीकी एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण, कौशल विकास, शिक्षित बेरोज़गारी, रोजगार के अवसर, युवाओं की आकांक्षाओं तथा पारिवारिक परिस्थितियों से भी है। एक ओर विद्यार्थी बेहतर शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए अपने जिले अथवा राज्य से बाहर जाते हैं, वहीं दूसरी ओर शिक्षा प्राप्त करने के बाद उपयुक्त रोजगार की खोज उन्हें आगे पलायन के लिए प्रेरित कर सकती है।(डॉ. निरपेन्द्र कुमार सिन्हा, 2026)। इसके विपरीत रोजगार के लिए होने वाला पारिवारिक पलायन बच्चों की शिक्षा को भी प्रभावित करता है। इस प्रकार शिक्षा कभी पलायन का कारण बनती है और कभी स्वयं पलायन के प्रभावों से प्रभावित होती है।

बिहार में उच्च शिक्षा का विस्तार हुआ है, किंतु गुणवत्तापूर्ण संस्थानों, आधुनिक शिक्षण पद्धतियों, तकनीकी संसाधनों और व्यावहारिक प्रशिक्षण की उपलब्धता सभी क्षेत्रों में समान नहीं है। पारंपरिक व्याख्यान-आधारित शिक्षण, सीमित संसाधन, डिजिटल असमानता तथा व्यावहारिक अनुभव के अपेक्षाकृत कम अवसर उच्च शिक्षा की प्रभावशीलता को प्रभावित करते हैं। उच्च शिक्षा केवल उपाधि प्रदान करने तक सीमित न होकर विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान क्षमता, रचनात्मकता और व्यावहारिक दक्षता विकसित करने वाली होनी चाहिए। (Dr. Sharwan Kumar, 2026)। यदि विद्यार्थी को स्थानीय स्तर पर अपनी अपेक्षाओं के अनुरूप विषय, संसाधन और शैक्षिक वातावरण नहीं मिलता, तो बेहतर संस्थानों की ओर स्थान परिवर्तन उसके लिए स्वाभाविक विकल्प बन सकता है। शिक्षा के साथ रोजगार की उपलब्धता इस संबंध को और अधिक महत्त्वपूर्ण बनाती है। बिहार की बड़ी युवा आबादी को मानव संसाधन में परिवर्तित करने के लिए केवल औपचारिक शिक्षा का विस्तार पर्याप्त नहीं है। तकनीकी दक्षता, व्यावसायिक कौशल, उद्यमिता और स्थानीय रोजगार के अवसरों का समानांतर विकास भी आवश्यक है। यदि शिक्षा प्राप्त करने के बाद युवाओं को अपनी योग्यता के अनुरूप अवसर नहीं मिलते, तो शिक्षा के माध्यम से विकसित हुई आकांक्षाएँ उन्हें बेहतर रोजगार की तलाश में दूसरे क्षेत्रों की ओर जाने के लिए प्रेरित कर सकती हैं। इसलिए शिक्षा और पलायन के संबंध को राज्य के मानव संसाधन विकास से अलग करके नहीं देखा जा सकता (राजन कुमार एवं डॉ. प्रशांत कुमार, 2025)।

बिहार में दीर्घकालीन पलायन के कारणों से संबंधित आँकड़े इस संबंध का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष सामने रखते हैं। रोजगार पलायन का सबसे प्रमुख कारण है, किंतु शिक्षा भी स्थान परिवर्तन के स्वतंत्र कारण के रूप में उपस्थित है।

तालिका 1: बिहार के दीर्घकालीन प्रवासियों के प्रमुख कारण

पलायन का कारण	प्रतिशत
रोजगार	90.7
व्यवसाय	0.8

शिक्षा	8.5
कुल	**100.0**

स्रोत: Roy et al. (2021) की तालिका 5.1 में प्रकाशित बिहार संबंधी आँकड़ों के आधार पर लेखक द्वारा संकलित।

तालिका 1 से स्पष्ट है कि बिहार में दीर्घकालीन पलायन का प्रमुख कारण रोजगार है, जबकि शिक्षा के कारण भी उल्लेखनीय संख्या में लोग स्थान परिवर्तन करते हैं। शिक्षा का प्रतिशत रोजगार की तुलना में कम अवश्य है, किंतु उसका प्रभाव केवल अध्ययन की अवधि तक सीमित होना आवश्यक नहीं है। उच्च शिक्षा या प्रशिक्षण के लिए बाहर जाने वाला विद्यार्थी नए शैक्षिक, सामाजिक और व्यावसायिक परिवेश से जुड़ता है। शिक्षा पूरी होने के बाद यदि उसे गंतव्य क्षेत्र में बेहतर रोजगार की संभावना दिखाई देती है और बिहार में समान अवसर उपलब्ध नहीं होते, तो शैक्षिक पलायन आगे चलकर रोजगार-आधारित पलायन का रूप ग्रहण कर सकता है। इस कारण शिक्षा और रोजगार को पलायन के दो पूरी तरह स्वतंत्र कारण मानने के बजाय उनके बीच संभावित क्रमिक संबंध को भी समझना आवश्यक है। शैक्षिक पलायन को केवल बिहार से दूसरे राज्य में जाने तक सीमित करना भी उचित नहीं होगा। शिक्षा के लिए स्थान परिवर्तन विभिन्न स्तरों पर होता है। कोई विद्यार्थी अपने गाँव से प्रखंड या जिला मुख्यालय की ओर जा सकता है, कोई अपने जिले से राज्य के किसी बड़े शैक्षिक केंद्र की ओर और कोई उच्च शिक्षा या विशेष प्रशिक्षण के लिए दूसरे राज्य में जा सकता है। भारत में शिक्षा के लिए होने वाले आंतरिक पलायन का प्रशासनिक स्वरूप इस बहुस्तरीय प्रक्रिया को स्पष्ट करता है।

तालिका 2: भारत में शिक्षा हेतु आंतरिक पलायन का प्रशासनिक स्वरूप (पाँच वर्ष से कम निवास अवधि)

वर्ष एवं स्रोत	जिले के भीतर (%)	राज्य के दूसरे जिले में (%)	दूसरे राज्य में (%)
जनगणना 2001	53.0	32.2	14.8
राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण 2007–08	52.1	35.5	12.4
जनगणना 2011	53.7	32.8	13.5

स्रोत: Singh, Manchanda & Mishra (2022) की तालिका 1 के आँकड़ों के आधार पर लेखक द्वारा संकलित।

तालिका 2 से पता चलता है कि शिक्षा के लिए होने वाले आंतरिक पलायन का सबसे बड़ा हिस्सा जिले के भीतर होता रहा है। इसके बाद राज्य के दूसरे जिले में और फिर दूसरे राज्य की ओर होने वाला स्थान परिवर्तन आता है। यद्यपि ये आँकड़े संपूर्ण भारत से संबंधित हैं, वे बिहार के संदर्भ में शैक्षिक पलायन को समझने के लिए उपयोगी आधार प्रदान करते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि शैक्षिक गतिशीलता केवल अंतरराज्यीय पलायन नहीं है; स्थानीय और क्षेत्रीय स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की असमान उपलब्धता भी विद्यार्थियों के स्थान परिवर्तन को प्रभावित कर सकती है।

उच्च शिक्षा और पलायन के बीच संबंध का अगला महत्त्वपूर्ण पक्ष शिक्षा की रोजगारोन्मुखता है। विश्वविद्यालयी शिक्षा यदि केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित रहती है और विद्यार्थियों को कार्यस्थल, स्थानीय उद्योग, समुदाय, शोध तथा व्यावहारिक अनुभव से जोड़ने के पर्याप्त अवसर नहीं मिलते, तो शिक्षा और रोजगार के बीच दूरी बनी रहती है। बिहार के विश्वविद्यालयों में स्नातक स्तरीय व्यावहारिक प्रशिक्षण को उच्च शिक्षा और कार्यक्षेत्र के बीच सेतु के रूप में देखा गया है। (डॉ. मनीष प्रसाद, 2025)। इस प्रकार का प्रशिक्षण विद्यार्थियों की व्यावहारिक दक्षता, रोजगारयोग्यता और

वास्तविक कार्यपरिस्थितियों की समझ को विकसित कर सकता है। इसी क्रम में कौशल अंतराल और शिक्षित बेरोज़गारी का प्रश्न सामने आता है। शिक्षा के प्रसार के बावजूद यदि विद्यार्थियों में उद्योगों और बदलते श्रम बाजार की आवश्यकता के अनुरूप तकनीकी एवं व्यावसायिक कौशल विकसित नहीं होते, तो औपचारिक योग्यता रोजगार की सुनिश्चितता प्रदान नहीं कर पाती। बिहार में शिक्षित बेरोजगारी, अल्प-रोजगार तथा कुशल श्रमिकों के पलायन को शिक्षा और श्रम बाजार के बीच मौजूद असंतुलन से जोड़कर देखा गया है। व्यावहारिक प्रशिक्षण, डिजिटल दक्षता, उद्योग-अनुकूल कौशल तथा शिक्षण संस्थानों और रोजगार क्षेत्र के बीच बेहतर समन्वय इस अंतर को कम करने में महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं (डॉ. अजय कुमार, 2026)।

इन परिस्थितियों के आधार पर बिहार में शिक्षा, कौशल, रोजगार और पलायन के अंतर्संबंध को निम्नलिखित रूप में समझा जा सकता है—

तालिका 3: बिहार में शिक्षा, कौशल, रोजगार और पलायन के प्रमुख अंतर्संबंध

प्रमुख आयाम	उभरती हुई स्थिति	पलायन से संभावित संबंध
उच्च शिक्षा	गुणवत्तापूर्ण एवं व्यावहारिक शिक्षण की आवश्यकता	बेहतर संस्थानों की ओर छात्र पलायन
तकनीकी एवं व्यावसायिक कौशल	श्रम बाजार के अनुरूप कौशल की आवश्यकता	रोजगारयोग्यता प्रभावित होना
व्यावहारिक प्रशिक्षण	शिक्षा और कार्यक्षेत्र के बीच दूरी	बाहरी रोजगार के अवसरों की तलाश
शिक्षित बेरोजगारी	योग्यता के अनुरूप स्थानीय रोजगार की कमी	रोजगार के लिए अंतरराज्यीय पलायन
स्थानीय स्वरोजगार	कौशल, उद्यमिता और स्थानीय अवसरों की आवश्यकता	विवशतापूर्ण पलायन कम होने की संभावना

स्रोत: इस उपखंड में उद्धृत चयनित अध्ययनों के निष्कर्षों के आधार पर लेखक द्वारा संकलित।

तालिका 3 से स्पष्ट होता है कि शिक्षा और पलायन के बीच संबंध केवल उच्च शिक्षा संस्थानों की उपलब्धता तक सीमित नहीं है। शिक्षा की गुणवत्ता, उसका व्यावहारिक स्वरूप, कौशल निर्माण और स्थानीय अर्थव्यवस्था की रोजगार प्रदान करने की क्षमता मिलकर युवाओं के निर्णयों को प्रभावित करते हैं। शिक्षा व्यक्ति की योग्यता और आकांक्षाओं को बढ़ाती है; किंतु यदि राज्य की आर्थिक संरचना उन आकांक्षाओं के अनुरूप अवसर उपलब्ध नहीं करा पाती, तो बेहतर आय और व्यावसायिक प्रगति के लिए बाहर जाने की संभावना बढ़ सकती है। इस प्रकार शिक्षा जहाँ सामाजिक और आर्थिक गतिशीलता का माध्यम बनती है, वहीं स्थानीय अवसरों के अभाव में वही गतिशीलता भौगोलिक पलायन का रूप भी ले सकती है। शिक्षित युवाओं के संदर्भ में स्वरोजगार और कौशल विकास का प्रश्न भी विशेष महत्त्व रखता है। केवल सरकारी अथवा संगठित क्षेत्र की नौकरियों पर निर्भरता कम करने के लिए स्थानीय स्तर पर उद्यमिता और स्वरोजगार के अवसरों का विकास आवश्यक है। बांका जिले के शिक्षित युवाओं के प्रवासन व्यवहार पर केंद्रित अध्ययन

सरकारी स्वरोजगार और कौशल विकास योजनाओं को उनके स्थान परिवर्तन संबंधी निर्णयों से जोड़कर देखता है। इससे संकेत मिलता है कि स्थानीय स्तर पर आय, उद्यम और कौशल के व्यवहारिक अवसर उपलब्ध होना युवाओं के पलायन संबंधी निर्णय को प्रभावित कर सकता है (दिव्यांशु कुमार मिश्रा, 2026)।

यहाँ विद्यालयी शिक्षा का पक्ष भी महत्त्वपूर्ण है, किंतु उसे पूरी शिक्षा-पलायन प्रक्रिया की प्रारंभिक कड़ी के रूप में देखना अधिक उचित है। विद्यालय स्तर पर नियमित उपस्थिति, शिक्षा की निरंतरता और सीखने की गुणवत्ता आगे उच्च शिक्षा तक पहुँचने की आधारभूमि तैयार करती है। गरीबी, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, बाल श्रम, अभिभावकों की शैक्षिक स्थिति और अन्य सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियाँ किसी बच्चे की शिक्षा में बाधा उत्पन्न करती हैं तो उसका प्रभाव बाद के शैक्षिक और रोजगार संबंधी अवसरों पर भी पड़ सकता है। विद्यार्थियों की अनुपस्थिति और विद्यालय छोड़ने की समस्या पर किए गए अध्ययन में ऐसे सामाजिक एवं आर्थिक कारकों को शिक्षा की निरंतरता के लिए चुनौती के रूप में रेखांकित किया गया है (मनीष मोहन श्रीवास्तव एवं रेखा श्रीवास्तव, 2026)। रोजगार के लिए बाहर गया सदस्य परिवार को धन भेजता है तो उससे शिक्षा पर खर्च करने की क्षमता बढ़ सकती है। इसके विपरीत माता या पिता की अनुपस्थिति से बच्चों की शैक्षिक निगरानी कम हो सकती है, घरेलू जिम्मेदारियाँ बढ़ सकती हैं और परिवार के साथ बार-बार स्थान परिवर्तन की स्थिति में शिक्षा की निरंतरता प्रभावित हो सकती है। इसलिए पलायन के शैक्षिक प्रभाव को केवल आय वृद्धि अथवा केवल विद्यालय छोड़ने की समस्या के आधार पर नहीं समझा जा सकता।

निष्कर्ष एवं सुझाव

बिहार में शिक्षा और पलायन का अंतर्संबंध बहुआयामी और परस्पर प्रभावकारी है। यह केवल विद्यालयी शिक्षा या बच्चों के विद्यालय छोड़ने तक सीमित नहीं है, बल्कि उच्च शिक्षा, तकनीकी एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण, कौशल विकास, शिक्षित बेरोज़गारी, रोजगार के अवसर तथा युवाओं की आकांक्षाओं से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। बिहार में उच्च शिक्षा के विस्तार के बावजूद गुणवत्तापूर्ण संस्थानों, आधुनिक शिक्षण सुविधाओं, तकनीकी शिक्षा और व्यावहारिक प्रशिक्षण की उपलब्धता सभी क्षेत्रों में समान नहीं है। इसके परिणामस्वरूप अनेक विद्यार्थी बेहतर शिक्षा, विशेष पाठ्यक्रम, प्रशिक्षण तथा अधिक अनुकूल शैक्षिक वातावरण के लिए अपने जिले या राज्य से बाहर जाते हैं। शिक्षा के लिए होने वाला यह स्थान परिवर्तन स्वयं में नकारात्मक नहीं है, क्योंकि इससे विद्यार्थियों को नए ज्ञान, अनुभव और अवसर प्राप्त हो सकते हैं।

समस्या तब उत्पन्न होती है जब गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए बाहर जाना विकल्प के बजाय आवश्यकता बन जाए। शिक्षा के बाद रोजगार की स्थिति इस प्रक्रिया को और अधिक महत्त्वपूर्ण बना देती है। यदि उच्च शिक्षा प्राप्त युवाओं को राज्य के भीतर उनकी योग्यता और कौशल के अनुरूप रोजगार नहीं मिलता, तो वे बेहतर अवसरों के लिए अन्य राज्यों की ओर जाने को प्रेरित होते हैं। इस प्रकार शैक्षिक पलायन आगे चलकर रोजगार-आधारित पलायन में परिवर्तित हो सकता है। इसलिए उच्च शिक्षा, कौशल विकास और रोजगार को अलग-अलग क्षेत्रों के रूप में देखने के बजाय परस्पर जुड़ी हुई प्रक्रिया के रूप में समझना आवश्यक है। औपचारिक शिक्षा और श्रम बाजार की आवश्यकताओं के बीच अंतर युवाओं की रोजगारयोग्यता को प्रभावित कर सकता है। विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में व्यावहारिक प्रशिक्षण, तकनीकी दक्षता, उद्यमिता तथा कार्य-अनुभव को बढ़ावा देकर इस अंतर को कम किया जा सकता है। शिक्षा को स्थानीय उद्योगों, सेवा क्षेत्रों और आर्थिक गतिविधियों से जोड़ने से युवाओं को राज्य के भीतर ही अधिक अवसर प्राप्त हो सकते हैं। स्वरोजगार और स्थानीय उद्यमिता को बढ़ावा देना भी महत्त्वपूर्ण है। जिला स्तर पर कौशल प्रशिक्षण, लघु उद्योग, स्थानीय उत्पादन और उद्यमिता के अवसर विकसित किए जाएँ तो शिक्षित युवाओं के लिए

रोजगार के विकल्प बढ़ सकते हैं। इससे बाहर जाना समाप्त नहीं होगा, किंतु विवशतापूर्ण पलायन को कम करने में सहायता मिल सकती है। शिक्षा और रोजगार के लिए स्थान परिवर्तन सामाजिक तथा आर्थिक गतिशीलता का स्वाभाविक हिस्सा है। आवश्यकता इस बात की है कि बाहर जाना मजबूरी नहीं, बल्कि व्यक्ति का विकल्प बने। गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा, कौशल विकास, व्यावहारिक प्रशिक्षण, स्थानीय उद्यमिता और योग्यता के अनुरूप रोजगार के अवसरों का संतुलित विस्तार ही शिक्षा और पलायन के बीच अधिक सकारात्मक तथा विकासोन्मुख संबंध स्थापित कर सकता है।

संदर्भ सूची

1. वित्त विभाग, बिहार सरकार. (2025). बिहार आर्थिक सर्वेक्षण 2024–25. पटना: बिहार सरकार।
2. सिन्हा, निरपेन्द्र कुमार. (2026). वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बिहार से प्रव्रजन करने के कारण एवं परिणाम का समाजशास्त्रीय विश्लेषण. VED International Journal of Arts, Commerce and Technology, 2(2), 09–15. https://doi.org/10.65785/vijact.v2i2.13
3. कुमारी, प्रियंका एवं कंसल, हरिश. (2024). सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का विद्यालय पलायन: नालंदा बिहार के गिरियक प्रखंड के संदर्भ में. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 6(2-I), 55–60.
4. सिन्हा, आदित्य एवं रत्न, पारस. (2024). राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान: बिहार राज्य के परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन. भारतीय आधुनिक शिक्षा, 35(2), 30–48.
5. प्रकाश, चन्द्रा सत्या. (2023). बिहार के कोसी और सीमांचल क्षेत्र से होने वाले पलायन को रोकने में जीविका दीदी का योगदान: सम्भावनाएँ और चुनौतियाँ. International Journal of Political Science and Governance, 5(1), 198–207. https://doi.org/10.33545/26646021.2023.v5.i1c.223
6. Yadav, R. K., & Yadav, R. P. (2024). जनसंख्या प्रवास प्रतिरूप एवं आर्थिक परिवर्तन: कुमाऊं मंडल का एक भौगोलिक विश्लेषण. ShodhPatra: International Journal of Science and Humanities, 1(7), 47–59.
7. Paul, P. (2025, 28 अगस्त). पिताओं के प्रवासन से घर में पीछे छूटे बच्चों की शिक्षा में लाभ होता है या उसमें बाधा आती है? Ideas for India, हिंदी संस्करण.
8. Roy, A. K., Singh, P., & Roy, U. N. (2015). Impact of rural-urban labour migration on education of children: A case study of left behind and accompanied migrant children in India. Space and Culture, India, 2(4), 17–34. https://doi.org/10.20896/saci.v2i4.74

9. Anand, S. (2015). An Enquiry into the Reasons for Poor Development of Higher Education and Out-migration of Students in Bihar [Doctoral thesis]. Gokhale Institute of Politics and Economics, Pune.

10. Kumar, Sharwan. (2026). राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य में बिहार में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षण पद्धतियों का आलोचनात्मक विश्लेषण. International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary, 5(1), 218–224.

11. कुमार, राजन एवं कुमार, प्रशांत. (2025). विकसित भारत/2047 के परिप्रेक्ष्य में बिहार में मानव संसाधन विकास एवं शिक्षा: चुनौतियाँ और संभावनाएँ. International Journal on Science and Technology, 16(4). https://doi.org/10.71097/IJSAT.v16.i4.10041

12. Roy, A. K., Bhagat, R. B., Das, K. C., Sarode, S., & Reshmi, R. S. (2021). Causes and Consequences of Out-Migration from Middle Ganga Plain. Mumbai: International Institute for Population Sciences.

13. Singh, R., Manchanda, N., & Mishra, R. (2022). Internal student migration in India: Impact of the COVID-19 crisis. Asian and Pacific Migration Journal, 31(4), 454–477. https://doi.org/10.1177/01171968231154590

14. प्रसाद, मनीष. (2025). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत बिहार के विश्वविद्यालयों में स्नातक स्तरीय इंटर्नशिप कार्यक्रम: आवश्यकता, चुनौतियाँ एवं समाधान—एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. International Journal of Innovations in Science, Engineering and Management, 4(3), 474–483. https://doi.org/10.69968/ijisem.2025v4i3474-483

15. कुमार, अजय. (2026). बिहार में मानव पूंजी और बेरोज़गारी: कौशल अंतराल एवं रोजगारयोग्यता का एक मूल्यांकन. International Journal of Humanities and Social Science Research, 12(3), 219–225. https://doi.org/10.66856/ijhssr.2026.12.3.12281

16. मिश्रा, दिव्यांशु कुमार. (2026). बिहार के बांका जिले में शिक्षित युवाओं के प्रवासन व्यवहार पर सरकारी स्वरोजगार और कौशल विकास योजनाओं का प्रभाव: एक अनुभवजन्य विश्लेषण. The Academic: International Journal of Multidisciplinary Research, 4(2), 1910–1923.

17. श्रीवास्तव, मनीष मोहन एवं श्रीवास्तव, रेखा. (2026). विद्यालयों में विद्यार्थियों की अनुपस्थिति एवं ड्रॉपआउट का अध्ययन. प्राथमिक शिक्षक, 49(3), 42–54.